Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 3, May-June – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 02/06/2020 Accepted on : 21/06/2020 Publication Date: 30/06/2020

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और राष्ट्र निर्माण में संस्कृति की भूमिका पर पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के विचार

पवन कुमार दास
रिसर्च स्कॉलर, राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, ब्राम्बे, झारखण्ड,
Email: kpawan124@gmail.com

शोध सारांश : राष्ट्र निर्माण किसी भी देश के लिए बहुत ही जरुरी है और भारत जैसे देश के लिए जहाँ विविधताओं में भी एकता है, राष्ट्र निर्माण की ज्योति जलाना और संस्कृति की रक्षा करना बहुत जरुरी है. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना है की भारत माता से अगर 'माता' शब्द हटा दिए जाये तो सिर्फ यह एक जमीन का टुकड़ा रह जायेगा. ऐसे ओजोस्वी विचार ही देश के नागरिकों को एक दुसरे के प्रति राष्ट्रहित के बारे में सोचने पर मजबूर करता है. बहुमुखी प्रतिभा के धनी पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना है की किसी भी देश में केवल एक ही संस्कृति रह सकती है, कांग्रेस या साम्यवादियों की बहुसंस्कृतिवादी विचारधारा देश को कई टुकड़ों में विभाजित कर सकता है, संस्कृति राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, देशप्रेम के प्रति अस्पष्ट और क्षीण भावना नहीं होना चाहिए, देशप्रेम के लिए एक मार्ग पर चलकर ही सभी नागरिक देश को समुन्नत बना सकता है. वर्तमान समय में अगर सभी का मार्ग एक ही होता तो भारत देश का चरित्र कुछ और ही होता, परन्तु सभी का मार्ग अलग अलग है, वर्तमान समय में राष्ट्रवाद से सभी विचलित हो चुके हैं. पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्र निर्माण के लिए चार उचित मार्ग के बारे में विश्लेष्ण किया है– अर्थवादी, राजनीतिवादी, मतवादी, संस्कृतिवादी. भारतीय जीवन को धर्म प्रधान बनाने का मुख्य कारण यह है की इसी में जीवन की संभावनाएं मौजूद है. उनका मानना है की इतिहास में जो संघर्ष हुयें हैं वो संस्कृति के लिए ही हुआ है और आगे जो संघर्ष होंगे वो भी संस्कृति को लेकर ही होगा. आगे उनका मानना है की अगर भारत की आत्मा को समझना है तो उसे राजनीति अथवा अर्थनीति के चश्में से न देखकर सांस्कृतिक रूप से देखना ज्यादा बेहतर होगा. राजनितिक जीवन तभी सुखी होगा जब किसी देश की संस्कृति बेहतर हो. पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्र निर्माण के बारे में कहते हैं की संस्कृति ही भारत की आत्मा होने के कारण वे भारतीयता की रक्षा एवं विकास कर सकते हैं. इस तरह राष्ट्र निर्माण के बारे में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सभी विचार और उपर लिखे सभी बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा शोधपत्र में किया गया है.

संकेताक्षर : राष्ट्रवाद, राष्ट्र निर्माण, सांस्कृतिक संघर्ष. ।

१ पृष्ठभूमि :

बहुमुखी प्रतिभा के धनी पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म जयपुर के धनकिया गाँव में 25 सितम्बर 1916 को एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था, उनके पिताश्री भगवती प्रसाद उपाध्याय स्टेशन मास्टर थे. बचपन में माता–पिता के निधन हो जाने के फलस्वरूप लालन–पालन उनके मामा राधारमण शुक्ल ने किया. विधार्थी जीवन में ही पंडित दीनदयाल राष्ट्रीय सेवक संघ के विचारधारा से प्रभावित होकर संघ से जुड़ गये, उनके प्रतिभा के कारण 1942 में लखीमपुर में जिला प्रचारक के रूप में पदभार ले लिया और आजीवन संघ के सिद्धांतों पर चलते रहे और देश एवं समाज के लिये अपना सर्वस्व जीवन त्याग दिया. 11 फरवरी 1968 को मुगलसराय स्टेशन पर उनका पार्थिव शरीर रहस्यमय स्थिति में प्राप्त हुआ था. राष्ट्रीय सेवक संघ और भारतवासियों के लिए यह घटना किसी अघात से कम नहीं था. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचारों में राष्ट्रवाद की भावना कूट–कूटकर भरा हुआ था, इनके द्वारा दिए गए दर्शन को एकात्म मानववाद कहा जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य ''स्वदेशी सामाजिक आर्थिक मॉडल'' प्रस्तुत करना है जिसमे राज्य के विकास के केंद्र में 'मानव' हो, उन्होंने वर्गहीन, जातिहीन, और संघर्ष मुक्त सामाजिक वयवस्था की कल्पना किया था, ऐसे महान विभूति को पाकर भारतभूमि गर्व करता है. पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनैतिक और वैचारिक परिपक्वता में जवाहरलाल नेहरु के समकक्ष थे. वह एक कुशल पत्रकार, अर्थशास्त्री, दार्शनिक, समाजशास्त्री और राजनीतिज्ञ थे. उन्होंने सभी विधावों का प्रयोग करके न केवल भारत को आजादी दिलाया बल्कि आजादी के बाद राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया, उन्होंने अपने विचारों को पत्रकारिता के माध्यम से खुलकर लोगों के सामने लाया, उनके पत्रकारिता में भारतीय संस्कृति और राष्ट्र धर्म का स्पष्ट झलक दिखाई देता है. पंडित जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में राष्ट्रवादी विचार से कभी समझौता नहीं किया और इसी ध्येय पर जीवन पर्यंत चलते रहे. ज्ञान के अथाह सागर में डुबकी लगते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अनेक

विषयों पर खुलकर अपने विचारों को पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान देते रहे, जब भारत में साम्प्रदायिक ताकत हावी हो रहा था तब पंडित जी ने राष्ट्रीय एकता के मर्म को बयां करते हुए पांचजन्य में 24 अगस्त 1953 में लिखा था कि '' यदि हम एकता चाहते हैं तो भारतीय राष्ट्रीयता जो हिन्दू राष्ट्रीयता है तथा भारतीय संस्कृति जो हिन्दू संस्कृति है उसका दर्शन करें. उसे मानदंड बनाकर चलें. भागीरथी के पुज्यधाराओं में सभी प्रवाहों का संगम होने दें. यमुना भी मिलेगी और अपनी सभी कालिमा खोकर गंगा में एकरूप हो जायेगी.'' उन्होंने आगे लिखा की '' राष्ट्रभक्ति की भावना को निर्माण करने और उसको साकार स्वरुप देने का श्रेय भी राष्ट्र की संस्कृति का ही है तथा वही राष्ट्र की संस्कृति सीमाओं को तोड़कर मानव की एकात्मकता क अनुभव कराती है. अतः संस्कृति की परम आवश्यकता है की बिना उसके राष्ट्र की स्वतंत्रता निरर्थक ही नहीं, टिकाऊ भी नहीं रह सकेगी.'' उनका मानना था की भारत में एक ही संस्कृति रह सकती है एक से अधिक संस्कृति का नारा देश के टुकड़े–टुकड़े करके हमारा जीवन का विनाश कर देगा. भारत में द्वि–संस्कृतिवाद और बहु–संस्कृतिवाद नहीं चल सकता है. वर्तमान समय में भारत में वैचारिक रूप से बहु–संस्कृतिवाद के कारण देश की दशा और दिशा ही बदल चूका है.

२ पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद :

प्रायः 'राष्ट्र' को 'नेशन' और 'राष्ट्रवाद' को 'नेशनलिस्म' से जोड़ा जाता है जो तर्कसंगत नहीं है ये विचारधारा पश्चिमी देशों से उभरकर आया है जहाँ न तो परम्परा होती है और न ही संस्कृति, पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना है की भारत में सभी मानव जाति को एक दूसरे से परस्पर जोड़े रखने की संस्कृति है जिसे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहा जाता है. पश्चिमी देशों में अलगाव की प्रवृति है मनुष्य अर्थ (धन) के पीछे जीवन पर्यंत भागते रहता है उनकी यही प्रवृति उन्हें मार्क्स के काफी करीब लाता है. साम्यवाद और मार्क्सवाद के दौर में बहु–संस्कृति का प्रचलन बढ़ गया है. भारत में मुस्लिम लीग का द्वि–सांस्कृतिवाद, कांग्रेस का प्रछन्न द्वि–संस्कृतिवाद, और साम्यवादियों का बहु–संस्कृतिवाद नहीं चल सकता है, कारण है की भारत में प्राचीन कल से ही एक संस्कृति चली आ रही है और आगे भी एक संस्कृति की परम्परा ही चलेगी, क्योंकि यह एक जीवंत संस्कृति है जिसे वर्तमान में कांग्रेस के विद्वान भी मानने लगे हैं और इस रह पर चलने का कोशिश कर रहा है 2017 में प्रस्तावित कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गाँधी का गुजरात चुनाव में सभी मंदिरों का भ्रमण एक–संस्कृतिवाद का प्रत्यक्ष सफलता का उदाहरण है. भाजपा अध्यक्ष अमित शाह का मानना है की सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पंडित दीनदयाल उपाध्याय की देन है उन्होंने जो इस कड़ी में जनसंघ के रूप में जो बीज बोया था वो एक वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया है. एक संस्कृतिवाद से भारत की एकता और अखंडता जीवित बनी रह सकती है. भारतवासियों के पास अपनी संस्कृति को जीवित रखने के लिए एक ध्येय पथ है जिस पथ पर चलकर राष्ट्रवाद को प्राप्त करना सभी का लक्ष्य है. हिन्दुत्व की ताकत जिस दिन भारत के सभी समुदाय समझ जायेंगे उस दिन एक संस्कृति का प्रचलन पुरे देश में हो जायेगा, परन्तु वर्तमान समय में सभी समुदाय के लोग में भिन्न–भिन्न मार्गों से देश को आगे ले जाना चाहते हैं और प्रत्येक समुदाय अपने मार्ग को तर्कसंगत बताता है, इन मार्गों का विश्लेषण करके सांस्कृतिक संघर्ष को समझ सकते हैं. पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने चार प्रमुख मार्गों का विश्लेषण किया है प्रथम वर्ग अर्थवादी का है, इसमें वो समुदाय आते हैं जो सम्पति को ही अपना सबकुछ समझता है और सम्पति के मालिक को ही समाज में व्याप्त बुराइयों का कारण मानता है. इसमें साम्यवादी और समाजवादी वर्ग के लोग आते हैं, इसके अनुसार भारत की राजनीति का निर्धारण अर्थनीति अर्थात आर्थिक रूप से होना चाहिए, इनके अनुसार संस्कृति और धर्म को अधिक महत्व नहीं देना चाहिए. दूसरा वर्ग राजनीतिवादी का है, इनके अनुसार राजनीतिक सत्ता ही प्रमुख है. संस्कृति, धर्म, और अर्थ राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने का सब साधन है, संस्कृति और धर्म का मूल्य राजनीति के लिए है, अन्यथा नहीं, इस वर्ग का अधिकांश लोग कांग्रेस में है, जो हमेशा राजनीतिक प्रभुत्व प्राप्त करना चाहता है. तीसरा वर्ग मतवादी है, ये वर्ग अपने–अपने धर्म के आधार पर ही राजनीति और अर्थनीति का निर्धारण करना चाहते हैं इस वर्ग में मुल्ला–मौलवियों या छद्म कांग्रेसियों को ले सकते हैं यधपि इस वर्ग का प्रभाव वर्तमान समय में नगण्य है. चौथा वर्ग संस्कृतिवादी का है, इसका मानना है की भारत की आत्मा का अधार संस्कृति है हमारा प्रथम कर्तव्य संस्कृति की रक्षा और विकास करने का लक्ष्य होना चाहिए, हम पश्चिमी देशों की संस्कृति को नहीं अपना सकते हैं और अगर अपना लिए तो निश्चय ही भारतीय संस्कृति का ह्रास होगा.

भारत की संस्कृति, धर्म की विशालता और प्राचीनता के कारण ही इतिहास में संघर्ष हुआ है जब इसके अस्तित्व की खतरे की बात आई तो भारतवासी संस्कृति के रक्षा हेतू कोई कमी नहीं किया और आगे का जो संघर्ष होगा वो धर्म, संस्कृति की रक्षा के लिए ही होगा, क्योंकि भारत की प्रकृति ही सांस्कृतिक है. संस्कृति और धर्म के परे भारत का अस्तित्व नहीं है, धर्म के बिना जीवन सार्थक नहीं है, अगर भारत में सांस्कृतिक एकता नहीं रहा तो लोगों का जीवन मृत व्यक्ति के समान होगा. अगर भविष्य में कभी युद्ध होगा तो संस्कृति के रक्षा के लिए होगा क्योंकि संस्कृति की रक्षा के लिए ही हमने विश्व में ख्याति प्राप्त किया है. पश्चिमी देशों में अर्थनीति की प्रधानता के कारण ही लोगों का जीवन प्रभावित हुआ है, वे अकेलापन, अचेत्नयता की स्थिति, अलगाव की स्थिति में रहता है जिसका प्रत्यक्ष और स्पष्ट कारण है धर्म और संस्कृति की अनुपस्थिति, भारत की एक संस्कृतिवाद के कारण ही सभी समुदाय भारत की एकता और अखंडता को बनाये रखने का प्रयत्न करता है. बड़े–बड़े साम्राज्यों ने भारत पर आक्रमण किया लेकिन भारत के लोग कभी अपनी संस्कृति का ह्रास

नहीं होने दिया, संस्कृति से कभी सौदा नहीं किया, संस्कृति का सदैव रक्षा किया, सांस्कृतिक संकट आने पर सभी ने मिलकर हथियार उठाया और विदेशी ताकतों से संघर्ष किया अगर मध्य युग के काल देखा जाये तो वास्तविक युद्ध संस्कृ ति की रक्षा के लिए ही हुआ था. महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी ने अपने प्राण त्याग करके भी भारतीय संस्कृति की रक्षा किया इन्हें विदेशी ताकतों के सामने झुकने नहीं दिया. साम्राज्यों का राजनीतिक गुलामी भारतियों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया लेकिन राजनीति को जीवन के सुख का कारण मात्र माना और संस्कृति को जीवन का आधार, क्योंकि संस्कृति के कारण ही भारतीय परम्परा जीवित है लोग एक संस्कृति के कारण ही एक सूत्र में बंधे हुए हैं.

३ सांस्कृतिक संघर्ष :

भारत में प्रमुख समस्या सांस्कृतिक संघर्ष का है जब–जब विदेशी ताकतों का भारत में आक्रमण हुआ भारतीय संस्कृति खतरे में पड़ी है. विदेशी शासकों के कारण ही भारत में विभिन्न संस्कृतियों का समिश्रण हुआ है और सभी अपने–अपने संस्कृति को श्रेष्ठ मानता है जिसके कारण अतीत से संघर्ष चला आ रहा है. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना है की बहु–संस्कृति या द्वि–संस्कृति के कारण भारत में निरन्तर संघर्ष चलेगा इसलिए भारत में एक संस्कृति को आधार बनाना चाहिए इसी में भारत का अस्तित्व है. सांस्कृतिक संघर्ष के कारण ही भारत के राष्ट्र निर्माण में बाधा आती है अनेक समुदाय और संस्कृति विधमान होने के कारण ही भारत में जातिवाद, सम्प्रदायवाद इत्यादि विधमान है अगर भारत में एक संस्कृति विधमान रहेगा तो राष्ट्र निर्माण में सभी समुदाय या संस्कृति के लोग एक सूत्र में बंधा रहेगा जिसके कारण आपस में संघर्ष नहीं होगा. जो विदेशी संस्कृति भारत में पनप रहा है उसे भारतीय संस्कृति में आत्मसात हो जाना चाहिए. भारत में मुख्य रूप से तीन प्रकार की संस्कृति विधमान है जिसके बारे में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने विस्तृत चर्चा किया है.

- द्वि–संस्कृति दृद्वि–संस्कृति के बारे में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना है की यह दो प्रकार से विधमान है प्रथम, स्पष्ट द्वि–संस्कृति जो प्रत्यक्ष रूप से दो संस्कृति के अस्तित्व को भारत में स्वीकार करता है इस वर्ग में मुस्लिम लीग आते हैं जिसका प्रबल समर्थक मोहम्मद अली जिन्ना थे. वे हिन्दू और मुस्लिम दो संस्कृति को भारत का प्रकृति मानते थे जो स्पष्टतया दोनों संस्कृति को सामान अधिकार देने की बात करता है. दूसरा, प्रछन्न द्वि–संस्कृति, इसमें वे वर्ग आते हैं जो स्पष्टतया दो संस्कृति के अस्तित्व को भारत में नहीं मानता, मुख्यतया एक संस्कृति– एक राष्ट्र की बात करता है लेकिन व्यवहार में दो संस्कृति का समिश्रण भारत में बनाये रखना चाहता है और दोनों को साथ लेकर चलना चाहता है, वे हिन्दू और मुस्लिम दोनों संस्कृतियों के समिश्रण का भारतीय संस्कृति बनाना चाहता है जो असंभव है. इस वर्ग में कांग्रेस के कुछ विद्वान आते हैं जो हिन्दू–मुस्लिम की राजनीति करके सत्ता प्राप्त करना चाहता है. भारत में एक संस्कृति– एक राष्ट्र है जिसमे मुस्लिम समुदाय भी आ जाता है.
- बहु–संस्कृति– बहु–संस्कृति के अंतर्गत वे वर्ग आते हैं जो अर्थनीति को प्रधान मानता है. वे प्रान्त को निजी संस्कृ ति मानते हैं. भारत के सभी जगहों में एक संस्कृति को नहीं मानता है. इस वर्ग में साम्यवादी या समाजवादी वर्ग के लोग आते हैं. बहु–संस्कृति जीवन को अर्थ–प्रधान मानते हैं, अतः वे आर्थिक एकता की चिंता करते हुए सांस्कृ तिक एकता के प्रति उदासीन बना रहता है.
- एक राष्ट्र– एक संस्कृति, इस वर्ग के लोगों के सामने कोई स्पष्ट ध्येय नहीं होता है. इस वर्ग के लोग संस्कृति को भारत की आत्मा समझते हैं और भारतीयता की रक्षा के लिए जीवन पर्यंत लगा रहता है. इनका उद्देश्य है की भारत में एक संस्कृति का प्रचलन होना चाहिए, भारत एक विशाल देश है यहाँ अनेक समुदाय के लोग रहते हैं लेकिन विविधता में एकता का प्रचलन देखा जाता है वो एकता भारतीय संस्कृति है, अनेक धर्मावलम्बी होने के बावजूद सभी एक सूत्र में बंधे रहता है यही भारतीयता की पहचान है यही भारत का एक–संस्कृतिवाद है इसलिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना है की भारत में एक संस्कृति विधमान रहना चाहिए.

४ निष्कर्ष :

भारत की आत्मा को अगर समझना है तो कुछ दिन भारत में ठहर के देखिये, इसकी परम्परा का स्वाद चखिए, भारतीय संस्कृति को अपने संस्कृति में आत्मसात करके देखिये तभी असली भारत को पहचान पाएंगे. अक्सर पश्चिमी देशों के लोग भारत भ्रमण के लिए आते हैं वो भारत सिर्फ परम्परा, संस्कृति, गंगा की विरलता गांवों की सरलता देखने आते हैं. विश्व को यदि हम कुछ दे सकते हैं, सिखा सकते हैं तो वो है सांस्कृतिक सहिष्णुता, धार्मिक सहिष्णुता, धर्म की विविधता में एकता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय की सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का स्पष्ट उदाहरण यही है. भारत में राष्ट्र–निर्माण सांस्कृ तिक आधार पर होना चाहिए तभी भारत विश्वगुरु बन सकता है. पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्र–निर्माण के लिए सांस्कृतिक एकता पर जोर इसलिए दिया क्योंकि प्राचीन समय से भारत में संस्कृति के लिए अनेक संघर्ष हुए हैं लेकिन भारत के लोग कभी विचलित नहीं हुए हैं हर संघर्ष का सटीक जवाब दिया है आजादी के बाद सभी संस्कृति का प्रचलन भारत में बढ़ गया और कांग्रेस की राजनीति हिन्दू–मुस्लिम समावेश की राजनीति में भारतीय संस्कृति का ह्रास हो रहा था

इस कारण किसी एक पार्टी को संस्कृति की रक्षा का जिम्मा उठाना था इस पूण्य कदम की और जनसंघ बढ़ा जिसका बागडोर पंडित दीनदयाल ने उठाया और इस पूण्य पथ पर आगे भारतियों को चलने के लिए आग्रह किया. वर्तमान समय में अगर भारतीय संस्कृति, हिंदुत्व, मनु–कौटिल्य के विचारों का अध्यन हो रहा है तो उसका श्रेय जाता है पंडित दीनदयाल उपाध्याय को, जिन्होंने भारतीय संस्कृति को जीवित रखने का साहस किया.

सन्दर्भ सूची :

1. Shastri, V. (2015), Pandit Deen Dayal Upadhyaya's Roadmap for India, Partridge Publishers, India.
2. Sharma, S. R. (2008), Life and Works of Pandit Deen Dayal Upadhyaya, Book Enclave Publishers, India.
3. शर्मा, महेश चन्द्र (2017), आधुनिक भारत के निर्माता प ंडित दीनदयाल उपाध्याय, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली,
4. उपाध्याय, दीनदयाल (2017), पॉलिटिकल डायरी, सुरूची प्रकाशन, दिल्ली.
5. मिश्रा, कौशल किशोर, राम शैलेश कुमार (2019),, पडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन, राज पब्लिकेशन, दिल्ली.